ORIGINAL RESEARCH PAPER

Sociology

''समाजवादी विचारक डॉ. राम मनोहर लोहिया का विश्व दर्शन''

KEY WORDS:

आदर्श दीपक मिश्र — पीएच.डी. शोधार्थी समाज शास्त्र विभाग एस.के.डी. विश्वविद्यालय, सूरतगढ़ रोड़, हनुमानगढ़ (राज.)

डॉ. अशोक कुमार भाटी — शोध निर्देशक समाज शास्त्र विभाग एस.के.डी. विश्वविद्यालय, सूरतगढ़ रोड़, हनुमानगढ़ (राज.)

लोहिया का विश्व दर्शन –

भारत के समाजवादी नेताओं में डॉ. राम मनोहर लोहिया का नाम प्रमुख है। डॉ. राम मनोहर लोहिया स्वतंत्रता आन्दोलन की अंतिम पीढ़ी के नेता थे। उनका सम्पूर्ण जीवन विचारपूर्ण आन्दोलन की श्रेष्ठतम गाथा है। बर्लिन विश्वविद्यालय में शोध प्रबन्ध ''नमक सत्याग्रह'' जो गांधी जी की सामाजिक, आर्थिक नीति पर केन्द्रित था, लिखते समय भारतीय नवजीवन परिषद ने उन्हें अपना सचिव चुन लिया।

1936–1937 में ही डॉ. लोहिया ने गांधी जी को लिखा था कि वह जब भी वायसराय से मिलें और भारत की कल्पना की बात करें तो चार मुद्दे मानव जाति के स्वतन्त्रता और उसके उदात्त व्यक्तित्व की निष्ठा के उठायें। इस सम्बन्ध में डॉ. लोहिया ने जिन चार बातों का उल्लेख किया था उनमें से एक बात विश्व नागकिता की भी थी। इस मुद्दे के तहत मनुष्य चाहे जिस देश में जन्म ले उसकी नागरिकता सीमित न की जाये। वह केवल उस देश का नागरिक न माना जाये वरन् वह पूरे विष्व का नागरिक माना जाये। वह जहां चाहे आये–जाये यहां तक कि बसना चाहे तो बसे। उसमें कोई रूकावट न पैदा की जाये। डॉ. लोहिया का मानना था कि मनुष्य किसी देश विशेष में जन्म नहीं लेता वह पूरे विश्व में जन्म लेता है। उस विश्व में जन्में मनुष्य को हम अपनी संकीर्णता में बांधकर केवल एक देश–काल में बांध देते है। इससे उसकी स्वायत्तता और आत्म–निर्णय का अधिकार नष्ट होता है।

गाँधी जी को लोहिया के ये विचार बड़े सूंदर लगे थे। इसकी उन्होंने चर्चा भी की थी जिसे डॉ० लोहिया सत्य करके दिखाना चाहते थे। वह अपने जीवन काल में तो उसे पूरा नहीं कर सके। उनके बाद भी इस दिशा में सोचने वाले भी कम लोग भी होंगे क्योंकि यह भावना राजनीति के परे की बात है और आज के युग में राजनीति को इस उदात्त स्तर से देखने वाले लोग नहीं के बराबर है। वास्तव में उनकी यह कल्पना एक कविता की भावात्मक अभिव्यक्ति थी जिसे वह निष्ठुर राजनीति के माध्यम से चरित्रार्थ करना चाहते थे। आज उनके ये विचार भले ही अटपटे लगे पर आज नहीं तो कल उनकी ये अवधारणायें वास्तविक लगेगी। वह दिन दूर नहीं है जबकि दुनिया को अपनी आत्मरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ बनाने के लिए , किसी न किसी रूप में इस दिशा में सोचने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। निश्चय ही तब लोहिया के ये विचार प्रकाश स्तम्भ के समान ये रोशनी देंगे। यूरोपियन यूनियन बन जाने के बाद लगभग सभी यूरोप के देश रेल एवं सड़क के मार्ग से जुड़ गए है। सम्पूर्ण यूरोप की एक विदेश नीति, रक्षा नीति एवं वित्त नीति हो गयी है। यह वही यूरोप है जो शीत युद्ध में दो धुर्वों में बंटा हुआ था। भारत से सीधे यूरोप एवं केंद्रीय एशिया के देशों के बीच रेल मार्ग के सम्पर्क की योजनाएं बन रही है। वर्तमान में राष्ट्रों की सीमाएं किसी न किसी रूप से जुड़ी हुई है।

लोहिया के लिए समस्त विश्व एक सम्पूर्ण इकाई के समान था जिसे इंसान ने टुकड़ों में बाँट रखा था। चाहे गोरा मनुष्य हो या कला , मनुष्य मनुष्य होने के नाते एक है। उसे एक सुदृढ़ इकाई के रूप में जीने का अधिकार है। मानव सभ्यता आज जिस शिखर पर पहुँच गयी है, उसे देखते हुए इस सम्पूर्ण मानव जाति को एक संबद्धता और एक दूसरे के सुख दुःख का भागीदार होकर जीने की सुविधा होनी चाहिए। वह यह मानते थे कि इतिहास के इस बिंदु पर पूरी मानव सभ्यता को यह अनुभव करना चाहिए कि सारे संसार में मनुष्य मात्र की एक बिरादरी है। यदि वह सबको मान कर नहीं चलेगी तो हर दस – पांच साल बाद एक युद्ध की विभीषिका, एक सामूहिक नर–संहार, एक विस्फोट, ऐसा होगा जो पुरे संसार को हिला देगा। वर्तमान परमाणु अस्त्रों की विषमता को रोकने के लिए वह कुछ आधारभूत नैतिक मूल्यों के प्रति आग्रहशील थे। सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों तथा सौंदर्य और कला की दृष्टियों को विकसित करके वह नए सिरे से एक सृजनात्मक एवं सरक्षणात्मक सिद्धांत पर पूरी मानव जाति की गतिविधि ले जाना चाहते थे ताकि इन मूल्यों के आधार पर मनुष्यों को जीने का आधार मिल सके, पूरा संसार भयमुक्त होकर एक विष्व नागरिक के रूप में जीने की सुविधा पा सके। इसके साथ ही डॉ० लोहिया का लक्ष्य हर व्यक्ति को इस विश्व का सचेतन एवं जीवित प्राणी के रूप में स्थापित करना भी था।

डॉ० लोहिया पुरे विश्व में राष्ट्रिय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाना चाहते थे। आज संसार में व्याप्त भय तथा संत्रास के वातावरण में कोई भी राष्ट्र चाहे कि वह अपने आप में बंद होकर बाहर की घटनाओं से अपने को बचा ले या इन विषमताओं से मुक्ति पा ले तो,यह सम्भव है। इसी प्रकार यदि सभी राष्ट्रों में कलह, युद्ध और आतंक का वातावरण हो और इन सब के बीच कोई चाहे की किसी प्रकार की अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना जागृत कर ले तो यह भी असंभव है। विष्व में शांति–व्यवस्था स्थापित करने के लिए एक साथ दोनों स्तरों पर काम करना होगा। एक ऐसी राष्ट्रिय और अंतर्राष्ट्रीय समझदारी विकसित करनी होगी कि जिससे दोनों स्तरों पर एक व्यापक संतुलन एक दूसरे कि सापेक्षता में विकसित हो सके।

वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करते हुए डॉ० लोहिया ने कहा था कि आज दुनिया दो अलग अलग खेमों में बंटी है। पहला तो सोवियत रूस का खेमा है और दूसरा है एटलांटिक खेमा। इसी तरह गरीबी और अमीरी को भी लेकर दुनिया बंटी हुई है। पहली तो है अमीरों की दुनिया जो पश्चिम के देशों में है और दूसरी है गरीबी और भुखमरी की दुनिया जो अफ्रीका, एशिया आदि में फैली हुई है तथा सोवियत और एटलांटिक के बीच फैली है। इनमें संवाद नहीं है। अधिकतर गरीब दुनिया के देश अमीर देशों के गुलाम है, या गरीब देश अमीर देशों के उपनिवेश हैं। इससे गरीब देशों को शोषित होना, उनका पिछड़ेपन का जीवन जीना अपने आप में एक दर्दनाक स्थिति पैदा करता है। इन दोनों में संतुलन नाम की कोई चीज है ही नहीं। परिणामस्वरूप कि हर प्रकार का शोषण यहां व्याप्त है।

अमीर दुनिया जिसमे प्रायः यूरोप और अमेरिका के देश आते है, उन्होंने गरीब दुनिया को अपने शोषण का केंद्र बना लिया है। डॉ० लोहिया इस प्रक्रिया को बदलना चाहते थे। वह इस अंतर्राष्ट्रीय जिमींदारी को समाप्त करना चाहते थे। वह कहते थे कि यह तभी होगा जब इन देशों को भी अपने अधिकारों और विचारों को व्यक्त करने का अवसर मिलेगा, उसे अपनी अस्मिता और जातीय स्मृति से लगाव होगा। आज तो संसार की इस गरीब दुनिया का सबसे बड़ा अभिशाप यह है कि वह इस गोरी दुनिया की नकल में लगी है। अपने स्वदेशी मन और स्वदेशी साधनों के प्रति उसकी आस्था नहीं है। पश्चिम की चमक धमक के सामने वह एक प्रकार हीन भावना से ग्रस्त है। इस कष्ट से उसे मुक्ति तभी मिलेगी जब उसमें आत्मविष्वाश पैदा होगा। डॉ० लोहिया ने इस स्थिति का विश्लेषण करते हुए लिखा है कि – "रोम से होनोलुलू तक एक दुनिया है और टोकियो से काहिरा पार दूसरी। सारा एशिया दारिद्रय की बीमारी से पीड़ित है और एशियाई देशों का परस्पर सहानुभूति प्रेरित कर एक समान नीति अपनानी चाहिए।"

उनका मानना था कि दुनिया में असंतुलन है और व्याप्त खाई है वही विश्व अशांति का मुख्य कारण है। यह असंतुलन मन का है, दृष्टि का है। यह असंतुलन आकांक्षाओं का है। इससे जो विषमता पैदा होती है वह सारे मूल्यों को समाप्त कर देती है। इसलिए डॉ० लोहिया ने कहा था– ''असली अंतर्राष्ट्रीयवाद को नए संघर्ष पैदा करना चाहिए। मानवीय एवं निर्माण करने कि दृष्टि से सहायक शक्तियां भी पैदा करनी चाहिए। केवल संघर्ष शांतिपूर्ण रहे, इतना ही देखना होगा।"

निष्कर्ष–

लेकिन इसी के साथ डॉ० लोहिया इस असंतुलन को मिटाने के लिए एक सच्ची राष्ट्रीयता भी पैदा करना चाहते थे। इस राष्ट्रीय भावना का समर्थन करते हुए, वर्तमान विसंगतियों में जन्मी राष्ट्रीय भावना विषाक्त न होने पाए, इसके लिए एक प्रकार की चेतावनी देते हुए वह लिखते हैं– "अहं और अहं की आवश्यकतायें राष्ट्र, मानव, जन्नत और खुदा या औरत इन चार चीजों के लिए आदमी जिंदगी में अपनी लगातार प्रबल इच्छा जगा सकता है, आत्म – बलिदान भी कर सकता है। चारों में से आज की सबसे बड़ी राक्षशी शक्तियां अहंकार और राष्ट्रवाद की है। मानवतावाद को निश्चित रूप दिए बिना असली अंतर्राष्ट्रीयवाद पैदा करना असम्भव है। इंसानियत की कल्पना से जनता को असीम त्याग की प्रेरणा मिले , इतनी उसकी शक्ल सम्यक होनी चाहिए।"

डॉ० लोहिया जिस राष्ट्रवादी दृष्टि के सहारे अंतर्राष्ट्रीयवाद को विकसित करना चाहते हैं वह है मानवतावाद। इसी के आधार पर दुनिया के विभिन्न राष्ट्र जुड़ सकते है। यदि इन राष्ट्रों के बीच एकता स्थापित हो जाये तो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सद्भावना और प्रेम विकसित हो सकता है। गरीब दुनिया के बीच की खाई को मिटाने के लिए से विष्व के लोग मिलकर कोई

योजना बना सकते है। निश्चय ही योजना बनाई जाएगी, उसमें विश्व सरकार की एक योजना किसी न किसी चरण में अवश्य बनेगी। इस विश्व सरकार का पहला काम होगा उन गरीब देशों के लिए कुछ ऐसी योजनाएं बनाना जिससे रोम से लेकर होनोलुलू और टोकियो से लेकर काहिरा के बीच बसी दो दुनियाओं में वार्त्ता और सहयोग की भावना जागृत हो सके। यद्यपि ऐसा होने से एकदम से न तो गरीबी दूर होगी और न ही अमीर दुनिया के मन में तत्काल उदारता ही जागेगी, लेकिन इससे एक सोचने समझने का सिलसिला शुरू होगा। युद्ध और हिंसा आदि की सम्भावनायें कम होते –होते, एक स्वस्थ विश्व नागरिकता स्वतः विकसित होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. *शीला, पारस (1997). डा. राम मनोहर लोहिया एंड एषियन सोशलिज्म, पुष्पा प्रकाशन मण्डल, मेरठ*
2. *सिंघानिया, राजकुमार (1999). लोहिया ए स्टडी, आत्माराम एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, नई दिल्ली*
3. *प्रसाद, तरूण (2000). एषियाई समाजवाद एक अध्ययन, अखिल भारतीय सर्व सेवा संघ, वर्धा*
4. *ठाकुर, देवकिशन (2002). डॉ. राम मनोहर लोहिया के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विचार, एस. चन्द एण्ड कम्पनी लि. रामनगर, नई दिल्ली*
5. *त्रिपाठी, दिवाकर (2004). डॉ. राम मनोहर लोहिया का समाजवादी चिन्तन, रंजना प्रकाशन, हैदराबाद*
6. *त्रिपाठी, दिवाकर (2005). लोहिया की विचारधारा, लोक भारती प्रकाशन, हैदराबाद*
7. *देव, आचार्य नरेन्द्र (2006). राष्ट्रीयता और समाजवाद, ज्ञान मण्ड़ल लिमिटड, बनारस*
8. *शर्मा, पी.सी. (2008). लोहियाज फारेन पालिसी, एटीट्यूड्स इन्टर डिसिपलिन, वाराणसी*
9. *राव, उमाकान्त (2010). डॉ. राम मनोहर लोहिया और समाजवाद, लहर प्रकाशन, वाराणसी*
10. *वर्मा, राघव (2010). लोहिया का समाजवादी चिन्तन, चित्रा प्रकाशन, शास्त्री नगर, कानपुर*